खुशी के आँसू

• ब्रह्माकुमारी रीना सिंह, मोहम्मदपुर (नई दिल्ली)

मैं यह नहीं जानती थी कि मुझे यह सब लिखने का सौभाग्य कभी मिलेगा। लेकिन एक बात जान गई हूँ कि पिछले जन्मों में मैंने कोई अच्छा कर्म ज़रूर किया होगा जिस कारण इस सत्य को जाना कि दुनिया में जन्म-मरण के साथ-साथ पुनर्जन्म और आत्मा-परमात्मा भी हैं। पहले मेरी सोच यहीं तक सीमित थी कि जन्म के साथ मृत्यु निश्चित है और हमारे कर्मों के अनुसार स्वर्ग, नरक प्राप्त होता है। यह आधा-अधूरा सत्य है। बिना पूर्ण सत्य ज्ञान के पूरा प्रकाश नहीं होता। जैसे अगर मोमबत्ती और माचिस का ज्ञान न हो तो बिजली जाने पर हम अंधेरे में ही बैठे रह जाएंगे लेकिन इस बात का ज्ञान होने पर अंधकार को दूर किया जा सकता है। इसी प्रकार, दुनिया में रहते हुए अगर हम अपने आप को नहीं जानेंगे, आत्मा-परमात्मा को नहीं जानेंगे, अपने असली घर को नहीं जानेंगे तो अंधकार में ही रह जाएंगे। ज्ञान प्रकाश पाने के लिए हमें प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय जाना होगा। जब खुद को पूरा ज्ञान हो जाएगा तभी दूसरों को इस बारे में बता पाएंगे।

इस विद्यालय में आकर मुझे आत्मा, परमात्मा के बारे में, आत्मा और शरीर के बारे में पूर्ण सत्य ज्ञान मिला। इस दुनिया में रहते हुए हमें केवल शरीर का परिचय दिया जाता है लेकिन असली रूप में तो हम आत्मा हैं। शरीर का परिचय इस प्रकार दिया जाता है –

मैं कौन हूँ? – रीना सिंह
मेरा रूप क्या है? – मनुष्य
मेरे पिता का नाम – चंद्र सिंह
मेरा घर कहाँ है? – लक्ष्मी बाई नगर

लेकिन आत्मा का सत्य परिचय इस प्रकार है –

मैं कौन हूँ? – आत्मा
मेरा रूप क्या है? – ज्योतिबिन्दु
मेरे पिता का नाम – शिव परमात्मा
मेरा घर कहाँ है? – परमधाम

अगर उपरोक्त आत्मिक ज्ञान की बातें अन्दर समा गई तो हमारा जीवन इतना सुखमय बन जाएगा कि हम आत्मविभोर हो जाएंगे।

मुझे 9 दिसंबर, 2006 को मानेसर से आगे पटौदी रोड पर स्थित ब्रह्माकुमारीज़ के बड़े परिसर 'ओम शान्ति रिट्रीट सेन्टर' जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। पहले तो मैं इस दुविधा में थी कि जाऊँ या न जाऊँ लेकिन बाबा ने याद किया तो प्रोग्राम अनुसार चल दी अपनी मंजिल की ओर। रास्ते में तरह-तरह के ख्याल आए कि बच्चों को कैसे संभालेंगे। मेरे पति ने कहा, परेशान न हो, मैं बच्चों के पास रहूँगा, तुम क्लास में बैठ जाना। बाबा ने ऐसा साथ दिया कि पता ही नहीं चला, बच्चे पूरे दिन अपने आप खेले, अपने आप खाया। वहाँ के भाई-बहनों के बीच खाना-पीना, उठना-बैठना ऐसे लगा मानो किसी दूसरे ही लोक में आए हैं, शान्ति ही शान्ति। मन कह रहा था कि यहीं बस जाएँ, वहाँ हमें स्वर्ग जैसा अहसास हुआ। वहाँ के भाई -बहनों को मैं कोटि-कोटि दिल से प्रणाम करती हूँ जिन्होंने यह अहसास दिलाया कि हम मनुष्य, मनुष्य से नहीं बल्कि आत्मा-आत्मा भाई-भाई आपस में मिल रहे हैं।

सुबह चार बजे के ध्यान में बैठी तो मुझे जो कुछ मिला वो मेरी सबसे बड़ी दौलत है। मैं बैठी ही थी कि मेरा रोम-रोम खड़ा हो गया, पूरा शरीर रोमांचित हो गया, मेरी आँखों से आँसू आने लगे। बाबा के अव्यक्त स्वरूप ने बिना कुछ कहे मुझे गले से लगा लिया। यह सब कुछ इतना जल्दी हुआ कि मुझे सोचने का वक्त ही नहीं मिला और मुझे ऐसा लगा कि सब सोच रहे होंगे कि यह क्यों रो रही है लेकिन ये तो खुशी के आँसू थे।

❖